

February 2022

E-ISSN: 2348-7143

International Research Fellows Association's

**RESEARCH JOURNEY**

International E-Research Journal

Peer Reviewed, Referred &amp; Indexed Journal

Special Issue - 286 (B)

**हिंदी साहित्य में आदिवासी चेतना**

अतिथी संपादक :

डॉ. उज्ज्वल कदम, (प्राचार्य)

समाजश्री प्रशांतदादा हिरे कला, विज्ञान एवं वाणिज्य महाविद्यालय, नामपुर,

एवं वाणिज्य महाविद्यालय, नामपुर,

तह. बागलान, जि. नासिक (महाराष्ट्र)

विशेषांक संपादक :

प्रा. हर्षल बच्छाव

विशेषांक सह-संपादक :

प्रा. रवींद्र ठाकरे

प्रा. आनंदा पवार

मुख्य संपादक : डॉ. धनराज धनगर

For Details Visit To : [www.researchjourney.net](http://www.researchjourney.net)

WATIDHAN INTERNATIONAL PUBLICATIONS



'RESEARCH JOURNEY' International E- Research Journal  
Issue - 286 (B) : हिंदी साहित्य में आदिवासी चेतना  
Peer Reviewed Journal  
Impact Factor : 6.625

February-2022

E-ISSN - 2348-7143

INTERNATIONAL RESEARCH FELLOWS ASSOCIATION'S

**RESEARCH JOURNEY**

International E-Research Journal

Peer Reviewed, Referred &amp; Indexed Journal

Issue - 286 (B)

अतिथी संपादक :

डॉ. उज्ज्वल कदम, (प्राचार्य)

समाजश्री प्रशांतदादा हिरे कला, विज्ञान एवं वाणिज्य महाविद्यालय, नामपुर,

तह. बागलान, जि. नासिक (महाराष्ट्र)

विशेषांक संपादक :

प्रा. हर्षल बच्छाव

विशेषांक सह-संपादक :

प्रा. रवींद्र ठाकरे

प्रा. आनंदा पवार

मुख्य संपादक : डॉ. धनराज धनगर

WATIDHAN INTERNATIONAL PUBLICATIONS

For Details Visit To : [www.researchjourney.net](http://www.researchjourney.net)

\*Cover Photo (Source) : Internet.

© All rights reserved with the authors &amp; publisher

Published by:-

© Mrs. Swati Dhanraj Somawane, Director, Swatidhan International Publication, Yeola, Nashik

Email : [swatidhanrajs@gmail.com](mailto:swatidhanrajs@gmail.com) Website : [www.researchjourney.net](http://www.researchjourney.net) Mobile : 9665398258Website - [www.researchjourney.net](http://www.researchjourney.net)Email - [researchjourney2014@gmail.com](mailto:researchjourney2014@gmail.com)



### Editorial Board

#### Chief Editor -

Dr. Dhauraj T. Dhanganar,  
Assist. Prof. (Marathi)  
MGV's Arts & Commerce College,  
Yeola, Dist - Nashik [M.S.] INDIA

#### Executive Editors :

Dr. Tejesh Beldar, Nashikroad (English)  
Dr. Gajanan Wankhede, Kinwat (Hindi)  
Mrs. Bharati Sonawane, Bhusawal (Marathi)  
Dr. Rajay Pawar, Goa (Konkani)

#### Co-Editors -

- ❖ Prof. Mohan S. - Dean faculty of Arts, Delhi University, Delhi, India
- ❖ Prof. Milena Brotaeva - Head, Classical East Department, Sofia University, Sofia, Bulgaria
- ❖ Dr. R. S. Sarraju - Center for Translation Studies, University of Hyderabad, Hyderabad, India
- ❖ Mr. Tufail Ahmed Shaikh - King Abdul Aziz City for Science & Technology, Riyadh, Saudi Arabia.
- ❖ Dr. Anil Dongre - Head, Dept. of Management, North Maharashtra University, Jalgaon [M.S.] India
- ❖ Dr. Shailendra Leunde - R.T.M. Nagpur University, Nagpur [M.S.] India
- ❖ Dr. Dilip Pawar - BoS Member (SPPU), Dept. of Marathi, KTHM College, Nashik, [M.S.] India
- ❖ Dr. R. R. Kazi - North Maharashtra University, Jalgaon [M.S.] India
- ❖ Prof. Vinay Madgaonkar - Dept. of Marathi, Goa University, Goa, India
- ❖ Prof. Sushant Naik - Dept. of Konkani, Govt. College, Keape, Goa, India
- ❖ Dr. G. Harsh - Associate Professor, CSIBER, Kolhapur [M.S.] India
- ❖ Dr. Munaf Shaikh - N. M. University, Jalgaon & Visiting Faculty M. J. C. Jalgaon [M.S.] India
- ❖ Dr. Sanjay Kamble - BoS Member Hindi (Ch.SU, Kolhapur), T.K. Kolekar College, Nesar [M.S.] India
- ❖ Prof. Vijay Shirsath - Nunsasheb Y. N. Chavhan College, Chalisgaon [M.S.] India
- ❖ Dr. P. K. Shewale - BoS Member (SPPU), MGV's LVH College, Panchavati-Nashik [M.S.] India
- ❖ Dr. Hitesh Brijwasi - Librarian, K.A.K.P. Com. & Sci. College, Jalgaon [M.S.] India
- ❖ Dr. Sandip Nall - Sant Muktabai Arts & Commerce College, Muktanagar [M.S.] India
- ❖ Prof. Dipak Patil - S.S.V.P.S.'s Arts, Sci. and Com. College, Shindkhedra [M.S.] India
- ❖ Prof. K. M. Waghmare - Librarian, Anandibai Raorane College, Sawantwadi [M.S.] India
- ❖ Prof. Vidya Surve-Borse - MGV's LVH Arts, Sci. & Com. College, Panchavati-Nashik [M.S.] India

#### Advisory Board -

- ❖ Dr. Marianna Kotic - Scientific-Cultural Institute, Mandala, Trieste, Italy.
- ❖ Dr. M.S. Pagare - Director, School of Languages Studies, North Maharashtra University, Jalgaon
- ❖ Dr. R. P. Singh - HoD, English & European Languages, University of Lucknow [U.P.] India
- ❖ Dr. S. M. Tadkodkar - Rtd. Professor & Head, Dept. of Marathi, Goa University, Goa, India.
- ❖ Dr. Pruthviraj Taur - Chairman, BoS, Marathi, S.R.T. University, Nanded.
- ❖ Dr. N. V. Jayaraman - Director at SNS group of Technical Institutions, Coimbatore
- ❖ Dr. Bajarang Korte - Savitribai Phule Pune University Pune, [M.S.] India
- ❖ Dr. Leena Pandhare - Principal, NSPM's LBRD Arts & Commerce Mahila Mahavidyalaya, Nashik Road
- ❖ Dr. B. V. Game - Principal, MGV's Arts and Commerce College, Yeola, Dist. Nashik.

#### Review Committee -

- ❖ Dr. J. S. More - BoS Member (SPPU), Dept. of Hindi, K.J. Somaiya College, Kopergaon
- ❖ Dr. S. B. Bhombare, BoS Member Ch.SU, Kolhapur, T.K. Kolekar College, Nesar
- ❖ Dr. Uttam V. Nile - BoS Member (NMU) P.S.G.V.P. Mandals ACS College, Shahada
- ❖ Dr. K.T. Khairnar - BoS Member (SPPU), Dept. of Commerce, L.V.H. College, Panchavati
- ❖ Dr. Vandana Chandhari KCE's College of Education, Jalgaon
- ❖ Dr. Sayyed Zakir Ali, HoD, Urdu & Arabic Languages, H. J. Thim College, Jalgaon
- ❖ Dr. Sanjay Dhondare - Dept. of Hindi, Abhay Womens College, Dhule
- ❖ Dr. Anol Kategoankar - M.V.P.S.'s G.M.D. Arts, B.W. Commerce & Science College, Sinnar.

#### Published by -

© Mrs. Swati Dhanraj Sonawane, Director, Swatidhan International Publication, Yeola, Nashik  
Email : swatidhanrajs@gmail.com Website : www.researchjourney.net Mobile : 9665398258



### अनुक्रमणिका

अ.क्र.	शीर्षक	लेखक/लेखिका	पृ. क्र.
०१	'धृती अबा' नाटक में चित्रित आदिवासी चेतना	डॉ. योगिता हिरे, प्रो. डॉ. अनिता नेरे	०७
०२	आदिवासी समाज : वर्तमान दशा और दिशा	डॉ. यशोक जाधव	१३
०३	महादेव टोपपो की कविताओं में आदिवासी चेतना	प्रो. डॉ. विभाक मोरे	१७
०४	हिंदी काव्य विधा में आदिवासी चेतना	डॉ. सुलम बोसे	२२
०५	हिंदी काव्य में आदिवासी चेतना	डॉ. राजाराम शेवले	२९
०६	आदिवासी कहानियों में चेतना के स्वर	डॉ. रघुनाथ वाकळे	३३
०७	कवि बृजेश सिंह की गज़लों में अभिव्यक्त आदिवासी चेतना	प्रा.रविंद्र ठाकरे, प्रो. डॉ. अनिता नेरे	३८
०८	आदिवासी विमर्श	प्रा. के. के. बच्छाव	४३
०९	लोक संस्कृति का संवाहक - आदिवासी समाज	डॉ. यशोदा मेहरा	४५
१०	हिंदी काव्य नाटक विधा में आदिवासी चेतना	डॉ. व्ही. डी. सूर्यवंशी	४९
११	निर्मला पुसुल की कविताओं में आदिवासी स्त्री विमर्श	प्रा. हंसा बागरे	५२
१२	हिंदी मौखिक इतिहास में आदिवासी चेतना	डॉ. ज्योती रामोड	५७
१३	राजेंद्र अवस्थी के उपन्यास में आदिवासी विमर्श	डॉ. सीताबाई पवार	६०
१४	हिंदी कविताओं में आदिवासी चेतना	डॉ. योगिता कुमरे	६४
१५	उपन्यास साहित्य में चित्रित आदिवासी जीवन संघर्ष	प्रा. तिलेश पाटील	६७
१६	हिंदी साहित्य में आदिवासी चेतना	प्रा. तिलेश देवासुख	७०
१७	कथाकार संजीव के 'धार' उपन्यास में चित्रित आदिवासी चेतना	डॉ. अनिता राजवंशी, प्रो. डॉ. अनिता नेरे	७४
१८	आदिवासी समाज और हिंदी नाटक	डॉ. दीपा कुचेकर	७९
१९	हिंदी उपन्यास विधा में आदिवासी चेतना	डॉ. नाबासाहेब रसूल शेख	८५
२०	हिन्दी साहित्य में आदिवासी चेतना	प्रा. जगदीश पाटनवार	८८
२१	२१ वीं सदी के हिंदी काव्य में आदिवासी चेतना	डॉ. संदिप देवरे	९१
२२	'मौन घाटी' उपन्यास में आदिवासियों का सामाजिक जीवन	प्रा. हर्षल बच्छाव, प्रो. डॉ. अनिता नेरे	९४
२३	हिंदी काव्य विधा में आदिवासी चेतना	प्रा. दिपक आहिर	९७
२४	समकालीन आदिवासी साहित्य में जन चेतना	प्रा. राकेश प्यार	१००

*Our Editors have reviewed papers with experts' committees, and they have checked the papers on their level best to stop future literature. Except it, the respective authors of the papers are responsible for originality of the papers and intensive thoughts in the papers. Nobody can republish these papers without pre-permission of the publisher.*

- Chief & Executive Editor



## SWATIDHAN INTERNATIONAL PUBLICATIONS

For Details Visit To : [www.researchjourney.net](http://www.researchjourney.net)

\*Cover Photo (Source) : Internet.

© All rights reserved with the authors & publisher

Price : Rs. 1000/-

Published by –

© Mrs. Swati Dhanraj Sonawane,

Director,

Swatidhan International Publication,

Yeola, Nashik

Email : [swatidhanrajs@gmail.com](mailto:swatidhanrajs@gmail.com)

Website : [www.researchjourney.net](http://www.researchjourney.net)

Mobile : 9665398258



## आदिवासी समाज और हिंदी नाटक

डॉ. दीपा इतानत्र कुचेकर

सहायक अध्यापिका, हिंदी विभाग

कर्मवीर आवासोद्भव तथा ना.म. सोनवणे कला, वाणिज्य एवं विज्ञान महाविद्यालय,

मटाणा, नाशिक महाराष्ट्र

[dirdeepakuchekar@gmail.com](mailto:dirdeepakuchekar@gmail.com)

साहित्यजगत स्त्री अल्पसंख्याक, दलित, घुमंतू एवं आदिवासी जैसी जनजातियों के प्रति नए-नए विचारों को केंद्र में रखकर साहित्य का सृजन एवं पुनर्सृजन कर रहा है। भारतीय सभ्यता में आदिवासी समाज प्रकृति के सानिध्य में अपना जीवन यापन करता आया है। इन के लिए प्रकृति ही देवता है। आदिवासियों को उपहास्यक दृष्टि से जगती, महासूत्रों से धरती पुत्र, आदि कहे जाते हैं। महात्मा गांधी जी ने इन के लिए " निरिजन " शब्द प्रयुक्त कर प्रचलित किया है।<sup>1</sup>

आदिम (वि) आदि + दिमच - प्रथम, आदिकाल के "2" आदि ( स्त्री ) मूल, आरंभ, उद्भव, a beginning (संस्कृत आदि, आ + ददाती) "3 आदि आदिम के आशय प्राप्त होते हैं।

समाजशास्त्रीय परिभाषा में कहे तो विशेष कालखंड, विशेष परिस्थितियों में जीवनयापन करते हुए नगरीय जीवन की तुलना में आदिमता अर्थात् पुरानी परंपरा, रीति-रिवाज जतन करनेवाले लोग आदिवासी कहे जाते हैं। आदिवासी की वन्य जातियों का वर्गीकरण करने का प्रयास इंडियन कोन्सर्वेस ऑफ सोशल वेलफेयर बर्न्स ' ने किया। इस संस्था द्वारा ट्रायबल वेलफेयर कमेटी का कलकत्ता में अधिवेशन लिया गया इस अवसर पर एकत्रित मानव वंश शाखज एवं समाज कार्यकर्ताओं ने भारतीय वन्य जातियों का वर्गीकरण किया " घने जंगलों में रहनेवाला, प्राचीन जीवन क्रमवाला वन्य समाज ( ट्राईबल कम्युनिटीज ), शासीण रीति-रिवाजों से जीवन जीनेवाला अर्ध वन्य समाज (सेमी ट्राईबल कम्युनिटीज ), सम्कारित वन्य जमाती, हिंदू समाज रचना में समायी हुई जमाती"<sup>4</sup>

महाराष्ट्र में कुल 47 आदिवासी जमातीया पायी जाती है। आंध्र, बैगा, बैरा, बरेडा, वावचा, बामचा, बैना, भारिया, भूमिया, भूईलहार, भूमिया, पांडो, भात्रा, भिल्ल, सुजिया, विडवार, विरहूल, विरहोल, चौधरी, धाणका, धनवार, धोंडिया, दुबळा, गावित, गोंड, हलबा, हलवी, कमार, मल्हार, कोळी, डोर, परधान, पारधी, परजा, ठाकूर, वारली, मन्नरवारतु, आदि आदिवासियों की अपनी धर्म संकल्पनाएँ, रूढ़ी, परंपरा जीवन शैली, शिक्षा आदि आज भी वैशिष्ट्यपूर्ण हैं। इनकी अपनी बोलिया, भाषा है। आज वांगला, ओडिया, तेलुगु, कन्नड, संथाली, मल्लाम, मराठी, हिंदीआदि में आदिवासी जनजीवन को लेकर लेखन किया जा रहा है। भारतीय साहित्यकारों ने आदिवासियों की सभ्यता, शोषण, विस्थापन, अस्मिता की पहचान, परंपरा, आंचलिकता, भाषा आदि को महत्व दिया है। भारतीय स्वतंत्रता आंदोलन का एक क्रांतिकारी विरसा मुंडा आदिवासी युवक हैं जो आदिवासी समाज का आदि देवत माना जाता है।

मराठी नाट्य साहित्य में आदिवासियों को लेकर नाटक एवं एकांकीयों का सृजन किया गया है। ' एकवच्य ' -विश्वनाथ शंकर, 'तोडसाम' सोनेता कुर्सि विठ्ठलराव कन्नो चें जयदुल हाल पेन आदि गोंडी भाषा में लिखित स्वतंत्र निमित्ती है। कुंडलिक केदारी - 'छळ आणि विरह' सुजग मेखाम -आंतान माता माय, सवारी, सोंग आदि एकांकी।

हिंदी नाट्य साहित्य में प्रकाश स्तंभ, हरिकृष्ण प्रेमी - 'नरसिंह कथा', लक्ष्मीनारायण लाल - 'एक और द्रोणाचार्य', शंकर शेष -'अंधा युवा', धर्मवीर भारती - 'विरसा मुंडा', त्रिपुरारी शर्मा - 'हिरमा की कहानी', हवीव तनवीर - 'शंभुक', जगदीश गुप्त -'एक बार फिर', डॉ. सुशील कुमार सुमन - ' मोर्चा मानगड', धनश्याम



सिंह भाटी 'यासा', 'धरती आवा', ऋषिकेश सुलभ आदि नाटक आदिवासीयों को विभिन्न रूपों में, विभिन्न कोणों से आंकते हैं। हिंदी के नाटकों का लोकप्रियता और जागरणकारी स्वरूप भारतेंदु हरिश्चंद्र से ही प्राप्त होता है। 'उन्होंने मंचयुक्त नाटकों के दस प्रकारों में नाटक लिखे। इन नाटकों में सामान्य जीवन के कुंडलिन, गडरिया माधु आदि विभिन्न क्षेत्रों के लोगों का पात्र के रूप में प्रयोग किया।' 5 जो नाटक के सामाजिक क्लेश का विस्तार और परिवर्तन था।

भारत में देश आधुनिकता की लोकनाट्य परंपरा निरंतर प्रवाहमान रही है। इस धारा में भारत के बहुजन समाज की लोकनाट्य शैलियों की परंपरा मौजूद है। फिकारी ठाकुर ने विदेशिया लोक नाट्य शैली में इन्हीं उपेक्षित समझी जानेवाली जातियों के मनोभावों और समाज को सामने बाने का काम व्यापक स्तर पर किया। हरि कृष्णा त्रेमी का प्रकाश स्तंभ यह एक ऐतिहासिक संदर्भ को प्रस्तुत करनेवाला नाटक है। जो मेवाड़ का राजवंश अपने आदि पुरुष बाण्य रावल पर गर्व करता है। उसके व्यक्तित्व के साथ जनश्रुतियों में अनेक देवी और चमत्कारिक घटनाएं प्रचलित हैं। बाण्य के कार्य और विचार हमारे आज के भारत के लिए भी प्रकाश स्तंभ के रूप में हैं।

हिंदी भवन इलाहाबाद द्वारा प्रकाशित 'हमारा राजस्थान' ग्रंथ में उल्लेख है 'चित्तौड़ पर हुए एक अरब आक्रमण में इसी मानमोरी ने राज्य की रक्षा करने में कमजोरी दिखायी जिस पर उसके नरदार नागदा के गुहिल पुत्र बाण्य (काल भोज) ने 728 ई के करीब चित्तौड़ का दुर्ग उसने छीन लिया था।' 6 बाण्य रावल स्वयं राणा नहीं था लेकिन अर्धों की बाहू को रोकने के लिए उसे दुर्बल राणा से राज्य छिंटना पड़ा। बाण्य 'नीच और ऊंच के, धृत्रिय और भिल के, राजा और प्रजा के बीच विषमता की खाई को पाट देना चाहता है।' 7 जीवन का चक्र बहुत तेजी से घुमता है और बाण्य चित्तौड़ के महाराजा मानसिंह मौर्य की सेना का सेनापति बनता है। बाण्य जो उस राम का वंशज है जिसने विषय को गले लगाया, जिसने शवरी सीतली के चूटे बेर खाए, जिसने बानर चिरांगटिल कर लंका को जीता था। 8 बाण्य वागल बलपुत्र भील-मीणा आदि मखाओं के संगठन तथा अपनी परिपुष्ट काया से विजयधी प्राप्त करता है तथा चित्तौड़छिपित कालभोज बाण्य रावल बनता है।

हबीब तनवीर 'हिरमा की अमर कहानी' नाट्यकृति आदिवासी रियासत तिरुवमना की कहानी है। चित्तौड़सरा के शासक महाराज हिरमन देव सिंह गंगवंशी के गद्दी पर बैठने के कुछ ही महिने बाद रियासत तिरुवमना को दूसरी रियासतों की तरह हिंदुस्तानी शासन में शामिल कर ली गई जब यह मवाल उठा कि सामंतवाद को खत्म कर लोकतंत्र बिल तरह स्थापित किया जाए क्योंकि उस रियासत की पूरी आबादी आदिवासी है। उनका जीवन आदिवासी जीवन है और आदिवासी जीवन को सामंतवादी जीवन नहीं कहा जा सकता। 9 नाटक में कहते हैं पत्नी रेणुका हिरमन देव के खजाने से अंगूठी ले लेती है जिसे हिरमन देख केकर जनता के खजाने के रूप में रख देता है। इस अंगूठी के कारण हिरमन देव की रियासत और जीवन दोनों बले जाते हैं। इस नाट्य नृति में आदिवासियों का शोषण बताया गया है। सन् 1878 में अंग्रेजों द्वारा बनाए गए वन कानून के पारित होने के बाद आदिवासियों को बंगल में प्रवेश करने पर पावर्दी लग गई। 'जब जीवन का आधार, अर्थ उनसे छिना गया तो उनकी प्रतिक्रिया में अधिनृत्यक आदिवासी आंदोलन जगिंदरों, साहूकारों और अंग्रेजी सत्ता के खिलाफ हुए। यह संघर्ष आज भी चल रहा है। अपने ही घर बहल बेगाने हो गए हैं।

लक्ष्मीनारायण लाल की नाट्यकृति 'नरसिंह कथा' इस नाटक की कथावस्तु नृसिंह अवतार की कथा है। मूल कथा में हिरण्यकशिपु अत्याचारी शासक है और उसका पुत्र प्रह्लाद तथा उसके पक्षधर यामी सत्य और धर्म की पक्षधर सारी प्रजा हिरण्यकशिपु के विरोधी। प्रह्लाद अपने पिता के अन्याय का विरोध करता है। वह ईश्वर भक्त है और सांस्कृतिक, मूल्यों का अधिष्ठान है। सत्य और न्याय के लिए पिता का विरोध करता है। हिरण्यकशिपु प्रह्लाद को अपना सब से बड़ा शत्रु मानता है। उसे मारने के सभी उपाय करता है। प्रह्लाद ईश्वर को सब रक्षा समर्थ और सर्व व्यापक मानता है। हिरण्यकशिपु को खोज शेष सभी प्रह्लाद के साथ है। हिरण्य का अत्याचार बढ़ता है। जनता नाहि-शहि करने लगती है। उसे लगता है राज्य कर्मचारी प्रह्लाद से मिले हुए

हैं और उसे मारना नहीं चाहते। वह प्रह्लाद को केले के बोंबे से बांधकर अपने कृपण से स्वयं मारने का निश्चय करता है। कृपण के उठते ही बंबा तोड़ नरसिंह रूप में ईश्वर प्रकट होता है और हिरण्य का विदीर्ण कर देता है।

इस नाट्य कृति में हिरण्यकशिपु तानाशाह का प्रतीक है और प्रह्लाद जनता की स्वतंत्र कामना का। नाटक का नरसिंह अर्थात् प्रह्लाद का अभिन्न भिन्न है जो जंगलों में रहता है। उसका स्वभाव पशु का है। वह बराह बनकर हिरण्य का प्रह्लाद का चरित्र है। 'यदि रहता है -' याद रखना हम जंगली, शुद्ध, दलित, अनार्य जिन्हें न जाने किसने नाम दिए; हम एक दिन बराह बनकर तुम पर टूटेंगे।' 11 नाटक में इतनासत का चरित्र आदिवासी शीतलो के प्रतिष्ठित शक्ति के प्रतीक रूप में है। वह लोकतंत्र के लिए तानाशाह की समाप्ति के अतिव्यक्त पर बल देता है। 'मैं मनुष्य ही जंगल पशु। जानते हो पशु क्या होता? वह अपनी आज्ञा की के लिए नहीं रहता है? ... तुने अपने विरोधियों की हत्याकर हिंसा और दमन का जो राज शुरू किया वही मनुष्य बने रहना असंभव था।' 12 अपने उपर ही रहे अन्याय का विरोध कर अपने अस्तित्व के लिए लड़ते आदिम बस्ती की दाम्ता नरसिंह कथा है।

एक और द्रोणाचार्य शंकर शेष की रचना है। इसमें एकलव्य आचार्य द्रोणाचार्य का शिष्य बनना चाहता है। द्रोणाचार्य एकलव्य की प्रार्थना अस्वीकार करते हैं क्योंकि उनकी विद्या केवल ब्राह्मणों और क्षत्रियों के लिए है। तत्पश्चात् एकलव्य उनका पुतला बनाकर उनके चरणों में बैठकर अभ्यास करता है। उसके ज्ञान को देखकर आचार्य शंभु ही जाते हैं एकलव्य कहता है। 'आपके आशीर्वाद से मेरी विद्या कृतार्थ हुई। आपने बनवाली शिष्य से युर दक्षिणा मांगिए।' 13 आचार्य द्रोण ने श्रेण्या पाकर एकलव्य द्रोणाचार्य से निपुण हो जाता है। 'वह पांडु या कौरवों का बेटा भले ना हो। ब्यासराज का पुत्र तो है ही।' 14 वह व्याज पुत्र होते हुए दक्षिणा प्राप्त करने का मुख्य अपना अंगूठा काटकर चुकाता है। आचार्य द्रोण एकलव्य से अंगूठा मांगते हैं क्योंकि 'द्रुविद्या पर उसका अधिकार हो जाएगा। धृति-श्रिरे उसकी जति का अधिकार हो जाएगा। शक्तिवाली होने के बाद ये क्षत्रियों ने स्वर्घा करेगे और परिणाम होगा कर्णाजय, धर्म पर संकट।' 15 उसका अंगूठा छीनकर द्रोणाचार्य आचार्य ने आनेवाली ममाभ्य बातां को हमेशा के लिए रोक्ना चाहा है। एकलव्य परिपुर्ण होते हुए भी नकारा गया क्योंकि वह व्याज का पुत्र था। अंगूठे का दान मांग कर केवल एकलव्य को ही नहीं बल्कि उसकी संपुर्ण जाति को हमेशा के लिए विद्याओं ने वंचित रखने का प्रयास किया गया।

धर्मवीर मारि के 'अंधा युग' नाट्य कृति का कथानक महाभारत के उत्तरार्ध की घटना का है। 'महाभारत के अठ्ठारवें दिन की संझ्या से लेकर प्रभास-तीर्थ से कृष्ण की मृत्यु के क्षण तक का वर्णन है।' 16 गांधारी ने श्रीकृष्ण को दिए हुए शपथ के कारण व्याज और उसकी जाति सदा-सदा के लिए मनुष्य के मन में बस गयी है। गांधारी अपनी कुल को समाप्त होने देख कृष्ण को कहती है। 'तो सुनो कृष्णा प्रभु हो या परात्पर हो, कुछ भी हो सारा तुम्हारा वंश इसी तरह पागल कुलों की तरह एक-दूसरे को परस्पर फाड़ जाएगा। तुम बुद्ध उनका विनाशकर के कई वर्षों बाद किसी बने जंगल में माध्यायन व्याज के हाथों मारे जाओगे, प्रभु हो पर मारे जाओगे पशुओं की तरह।' 17 इस शपथ की पूर्ति हुई कारण बना व्याज अर्थात् जरा जो वृद्ध ज्योतिषी था उसका वध अश्वत्थामा ने किया जो प्रेत योनि में था। उस प्रेत योनि से उसे निकालने के लिए श्रीकृष्ण ने उसे बाण चलाने का आदेश दिया। अंत: कृष्ण के पग को मृग बदन समझकर व्याज तीर को खोज देता है। यह द्वारप युग का अंत और कलियुग का आरंभ है जो एक सामान्य व्याज अर्थात् बहेलिया शिकारी के हाथों हुआ है।

जगदीश पुरा के 'शम्भु' नाटक की कथा डॉ. फादर कामिल बुल्के ने रामकथा में कई अनुच्छेदों (618 तथा 628, 632) में दे दी है। वाल्मीकि रामायण, पद्म पुराण, महाभारत के शक्ति पर्व (अध्याय 149) रघुवंश के 15 वे सर्ग, उत्तररामचरित के द्वितीय अंक तथा आनंद रामायण आदि के अनेक अध्यायों में समाहित मिलती है।

नाटक का पात्र शम्भु कहता है -  
"शुद्ध हूं मैं  
लिए काली देह  
इसी से मुझ पर  
तुम्हें संदेह" 18



वह भले ही शुद्ध है किन्तु गुप्त जी ने उसे हरिजन की अपेक्षा 'भूमिपुत्र' के रूप में प्रस्तुत किया है।<sup>19</sup> इस मेरी दृष्टि में शम्भूक ही नहीं मारे मनुष्य भूमिपुत्र कहनाकर नयी सापेक्षता पाने के अधिकारी है।<sup>20</sup> इस नाट्यकृती में वनदेवता तथा दंडकारण्य में आदिवासियों की स्थितियों की अभिव्यक्ति है। राम जब चौदह वर्ष का बनवास पाते हैं उस समय वह वन से अपरिचित नहीं थे, ना ही उस जनजीवन से। आदिवासियों के जीवन की दार्शनिकता राम से कही जाती है

"ये निरक्षर वनस पिछड़े लोग  
महते रहे जब तक थालनाएँ  
अधमरे से कहाँ तक  
संतोष को खाए चबाए,  
क्यों करें वन पालन  
पशु की भाँति अत्याचार  
क्यों न मानव सा  
इन्हें मिलवा रहे व्यवहार।"<sup>20</sup>

यह आदिवासी अपनी दुनिया में जीते हैं -  
"पूरे से माथा सजाए नय नन  
बोछ सिर मर सिंग, पशु चेहरे पहन  
नाचती फिरती दिए गल बाहिया  
आदिवासी नर्तकों की पत्तियाँ।"<sup>21</sup>

वनवासी राम के वन में आने की खबर सुनकर उसकी राह जोहते हैं। उन्हें शबरी की बात याद है जो -

"जोहते हैं वाट ही दिन रात  
झोपड़ों के बीच जूँटे बेर  
शबरियों के कर लिए हैं डेर।"<sup>22</sup>

इस नाट्यकृति में वनदेवता, दंडकारण्य अंग में शुद्ध आदिवासी अर्थान भूमिपुत्रों की बात कही गयी है, तो रक्त तिलक अंश में शम्भूक और एकलव्य एक हो जाते हैं जो मनुष्यत्व के रूप में उभरते हैं। "वेता के शम्भूक को द्रुपद के एकलव्य से जोड़ते हुए वर्तमान युग तक का संस्पर्श कर लेता है जिसकी चेतना का मूल आधार मानवीय सन्ना पत्र प्रतिष्ठित है।"<sup>23</sup>

'एक बार फिर' डॉ. सुनील कुमार 'सुमन' द्वारा लिखा गया नाटक है। नाटक का प्रकाशन-  
आदिवासी स्वर और नयी शताब्दी नामक पुस्तक में 2004 को हुआ जिसका निर्देशन स्वयं नाटककार ने किया तथा 17 सितंबर 2000 को जे. एन. यु. में यूनाइटेड दलित स्टूडेंट्स फोरम की ओर से संचन किया गया।<sup>24</sup> यह नाट्यकृति वर्तमान परिप्रेक्ष्य को आकृति है। दलितों, आदिवासियों की उच्चलता को देखकर द्विज मानसिकता से युक्त बावलों, राजनेताओं की खोज खबर इसकी विशेषता है। डॉ. भीमसिंह के अनुसार - "हिंदुत्व की कमान संभाले लोगों की दृष्टि से आदिवासी केवल वनवासी हैं।"<sup>25</sup>

बरसदाल ... "हमारे यहाँ भरपूर कोशिश है कि आदिवासियों को परंपरा और संस्कृति के नाम पर दलितों से एकजम अलग-थलग कर दिया जाये। चुरणमल.... जी गुरुदेव, इसके लिए हमने आदिवासीयों को वनवासी नान दिख है। ताकि ये खुद को दलितों ने अलग समझें।"<sup>26</sup> यह वह खेल है जो सियामती बालें चलता है। अपने स्वार्थ हेतु हर जाति, धर्म, पंथ सबको अपने-अपने हिस्से कर अपना उल्लू सीधा करना चाहते हैं।

वनश्याम सिंह भाटी प्यासा की नाट्य कृति मोर्चा मानगड ऐतिहासिक नाट्यकृति है। इसका मुख्य पात्र गोविंद गुरु है जो बंजारा समाज का होते हुए राजस्थान और गुजरात की सीमा पर भीलों में जनजागृति लाने का अभूतपूर्व कार्य करता है। वह भीलों में बेगारी, गुलामी, नशापान आदि से मुक्ति की चेतना का प्रयास करता है। मानगड में अंग्रेज सरकार और जागीरदारों ने निहले आदिवासियों पर गालियाँ गोलियाँ चलायी थी।



अमानवीयता की दर्दनाक दार्शनिक कहलाने वाला मानगड पहला आलियावाला है। इस घटना में पंद्रह सौ से अधिक स्त्री पुरुष, बच्चे मारे गए थे। स्वतंत्र चेतना, महज स्वाभाविक जीवन, सामूहिकता कि मानवता, प्रकृति के प्रति अगाध श्रद्धा रखनेवाला आदिवासी वर्ग मनुष्य का आदिम रूप है जो उससे अभिन्न है।

ऋषिकेश सुलभ द्वारा 'धरती आवा' नाट्य कृति बिसरा मुंडा के जीवन को प्रस्तुत करती है। आदिवासियों के लिए बेचक, हैजा जैसी महामारीयों के रोगों से बचाव के तरीके जाननेवाला बिसरा मुंडा अंग्रेजी सत्ता तथा जागीरदारों के खिलाफ आंदोलन छेड़ता है। बिसरा ने छेड़ा आंदोलन तब तक चलाया जब तक आदिवासी समाज अभाव, गरीबी, शूख, स्वास्थ्य की सुविधा, समान अवसरों से वंचित रहेगा।

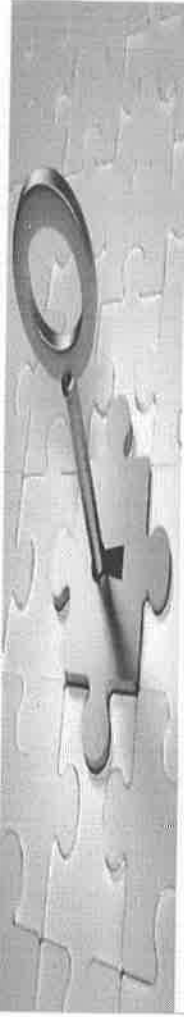
घने जंगलों में रहनेवाला प्राचीन क्रमवाला वन्य समाज, ग्रामीण रीति-रिवाजों से जीवन जतिवाला अर्धजन्य समाज तथा संस्कारित वन्य जमाती, हिंदू समाज रचना में समायी हुई जमाती या चाहे जो भी बड़े औद्योगिककरण, शहरीकरण, बावारीकरण और नए-नए बनते कानून आदि कई न कई कारणों से अपने अस्तित्व से दूर होता जा रहा है। मनुष्य की आदिम अवस्था उसके विकास की रफ्तार में कई दूर छूटती जा रही है और उपस्थित कर रही है। उनके जीवन के अनगिनत सवाल जो साहित्य की उपन्यास, कहानी, कविता आदि विभिन्न विधाओं में अभिव्यक्त हो रहे हैं। ऐसी स्थितियों में हिंदी नाट्य जगह कैसे पीछे रह सकता था। नरसिंह अर्थात इतारना बाप्पा रावल, एकलव्य, व्यास, शबरी, शंबुक, हिरमा देव, बिसरा मुंडा, गोविंद गुरु आदि पात्रों के माध्यम से आदिवासियों के जीवन संघर्ष की उनके हृक की अभिव्यक्ति नाट्य साहित्य अपने नाटकों में करता रहा है।

#### संदर्भ सूची :

1. महाराष्ट्रतील आदिवासी मराठी साहित्य : एक शोध, डॉ. माहेखरी गावित, पृ. 2
2. संस्कृत शब्दार्थ कोश, संपा. पं. शर्मा चतुर्वेदी, द्वारका प्रसाद तथा झा तारिणी, तृतीय संस्करण - 1967, पृ. 184
3. मराठी व्युत्पत्ती कोश, कुलकर्णी, जे. पा. द्वितीय आवृत्ती 1964, पृ. 74.
4. महाराष्ट्रतील आदिवासी मराठी साहित्य : एक शोध, डॉ. माहेखरी गावित, पृ. 4
5. नरसिंह कथा, लक्ष्मीनारायण लाल और उनका नाट्य, लक्ष्मीनारायण लाल, पृ. 79
6. प्रकाश स्तंभ - हरिकृष्ण प्रेमी, संकेत .
7. प्रकाश स्तंभ - हरिकृष्ण प्रेमी, पृ. 8
8. प्रकाश स्तंभ - हरिकृष्ण प्रेमी, पृ. 99
9. हिरमा की अमर कहानी - हवीक तनवीर, पृ. 8-9
10. हिंदी नाट्य साहित्य में आदिवासी जीवन - डॉ. भीम सिंह, पृ. 203
11. नरसिंह कथा, लक्ष्मीनारायण लाल, पृ. 30
12. नरसिंह कथा, लक्ष्मीनारायण लाल, पृ. 62
13. एक और द्रोणाचार्य - शंकर शेष पृ. 34
14. एक और द्रोणाचार्य - शंकर शेष पृ. 35
15. एक और द्रोणाचार्य - शंकर शेष पृ. 36
16. अंधा युग - धर्मवीर भारती, निर्देशन के बाद
17. अंधा युग - धर्मवीर भारती, पृ. 81
18. शम्भूक - जगदीश गुप्त, पृ. 62
19. शम्भूक - जगदीश गुप्त, कवी कथन, पृ. 14
20. शम्भूक - जगदीश गुप्त, पृ. 29



21. शम्भुक - जगदीश गुप्त, पृ. 38
22. शम्भुक - जगदीश गुप्त, पृ. 31
23. शम्भुक - जगदीश गुप्त, कवी कथन पृ. 14
24. आदिवासी केंद्रित हिंदी साहित्य - सुभा. डॉ. उषा कीर्ती राणावत पृ. 204
25. हिंदी नाट्य साहित्य में आदिवासी जीवन - डॉ. भीम सिंह, पृ. 204
26. एक चार फिर - डॉ. सुशील कुमार, पृ. 281



Category

- INDEXED JOURNAL
- SCIENTIST JOURNALS
- JOURNAL IJ
- SCIENTIST PORTAL
- DOWNLOAD LOGO
- CONTACT US
- SAMPLE CERTIFICATE
- SAMPLE EVALUATION SHEET

Journal Detail

Journal Name	RESEARCH JOURNEY
ISSN/ISSN	2348-7143
Country	IN
Frequency	Quarterly
Journal Discipline	General Science
Year of First Publication	2014
Web Site	www.researchjourney.net
Editor	Prof. Dharmaj Chandra & Prof. Gajendra Wankhede
Indexed	Yes
Email	researchjourney2014@gmail.com
Phone No.	+91 7707923360
Cosmos Impact Factor	2018 : 3.432

Research Journey

GIF, GLOBAL IMPACT FACTOR

New Initiative: Due to huge number of application please allow us time to update your journal

ISI  
SJIF 2019: 6.625  
Aka: [Mukundacharya.com](http://Mukundacharya.com)  
Evaluates various online



The journal is indexed in:

ISI Factor.com

Previous evaluation SJIF

- 2018: 6.428
- 2017: 6.201
- 2016: 6.087
- 2015: 5.985

Get Involved

Home	
Subscription Method	
Journal List	
Apply for Evaluation/Free Article	
Journal Search	

Research Journey

ISSN	2348-7143
Country	India
Journal's character	Scientific
Frequency	Quarterly
Location	Free for educational use
Tools availability	Free
Year publication	2014-2019
Website	researchjourney.net
Check Impact and Quality factor	
2014	6.085
2015	6.076

Contact Details

Editor-in-Chief	Prof. Dharmaj Chandra
	M.G.V.S ARTS & COMMERCE COLLEGE, YELDA, DIST WASHI
	India
Publisher	MRS. SWATI SOMWANE

Basic Information

Post Title	Research Journey
Other title (English)	Research Journey
Abbreviated title	
ISSN	2348-7143 (E)
URL	<a href="http://www.researchjourney.net">http://www.researchjourney.net</a>
Country	India
Journal's character	Scientific
Frequency	Quarterly
Location	Free for educational use
Tools availability	Free